Table of Contents

[□□□□□□ □□□](#)
[□□□□□□□□□□](#)
[□□□□□□□□□□](#)
[□□□□ □□ □□□□□](#)
[□□□□□□□ □□ □□□□□](#)
[□□□ 42 □□ □□□□□□](#)
[□□□□□ □□□□](#)
[□□□□□□□ □□□](#)
[□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□□](#)
[□□□□□□□ □□ □□□□](#)
[□□□□](#)
[□□□□□ □□ □□□□□](#)
[□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□](#)
[.](#)

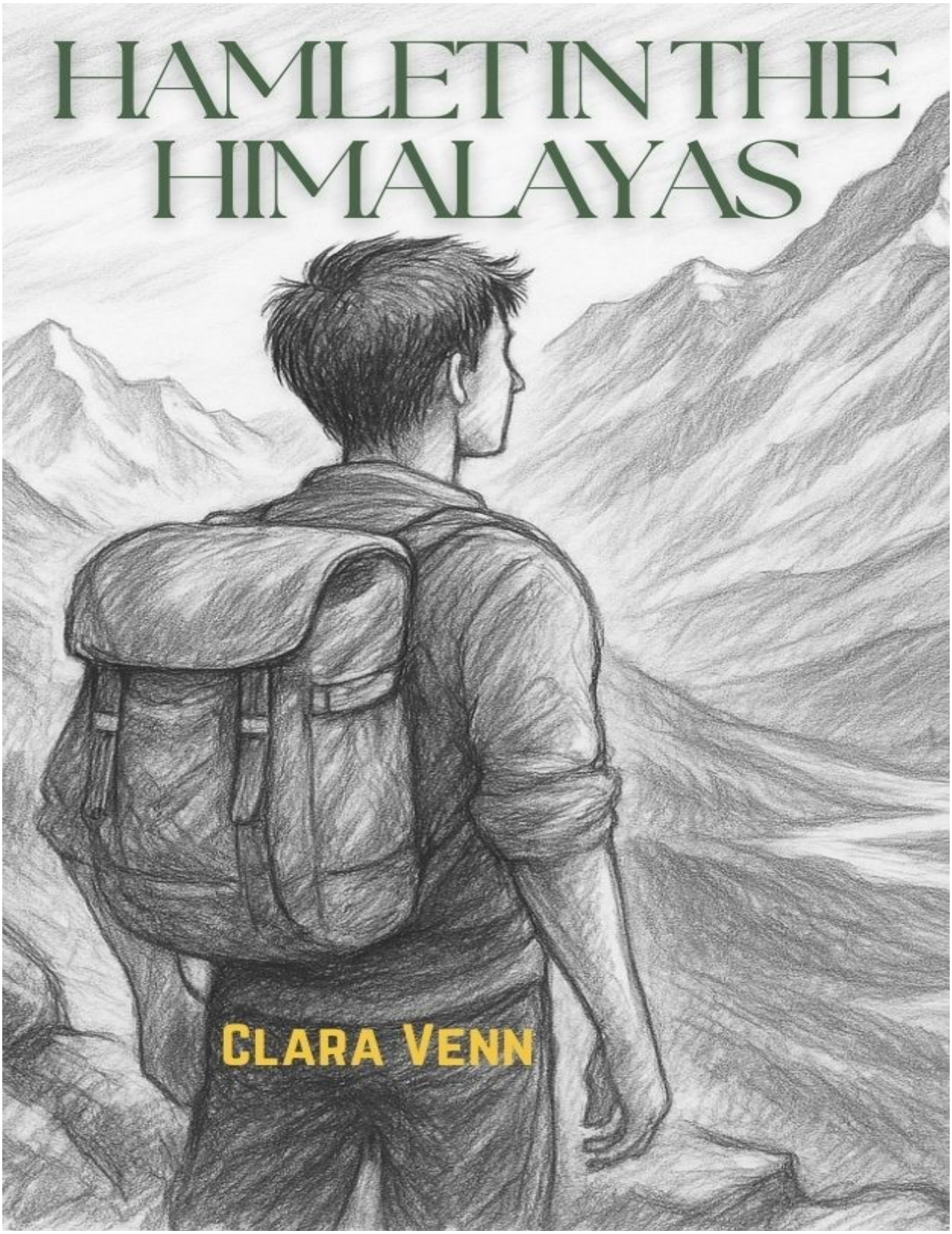
HAMLET IN THE HIMALAYAS
CLARA VENN

हैमलेट इन द
हिमालयस

परिवार के साथ हिमालय की एक दिल छू लेने वाली साहसिक यात्रा, साहस और यति की किंवदंती

क्लारा वेन

[redacted]

[redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted] 42 [redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted]

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

द बॉय फ्रॉम द
घाटी

सुबह का सूरज धीरे-धीरे बर्फ से ढकी चोटियों पर से रेंगता हुआ संकरी हिमालयी घाटी में अपनी पहली किरण बिखेर रहा था। सबसे ऊँची चोटियों पर जमी बर्फ चांदी से सुनहरी हो गई थी, जबकि छायादार घाटियों में घास पर पाला अभी भी मजबूती से जमा हुआ था। नीचे नदी कलकल करती हुई बह रही थी और ठंडी हवा में बर्फीली धुंध की छोटी-छोटी फुहारें उड़ा रही थी।

आर्य पुराने लकड़ी के पुल पर नंगे पैर खड़ा था, उसकी उंगलियां पाले से ढकी तख्तियों पर टिकी हुई थीं। वह चौदह साल का था—पतला-पतला, लेकिन उसकी आंखें तेज और बेचैन थीं, इन पहाड़ों से परे की दुनिया को जानने की तीव्र इच्छा लिए हुए। उसका दुबला-पतला शरीर ढलानों और पथरीली चोटियों पर चढ़ने में बिताए दिनों की कहानी बयां करता था, एक ऐसा शरीर जो पतली हवा का आदी हो चुका था।

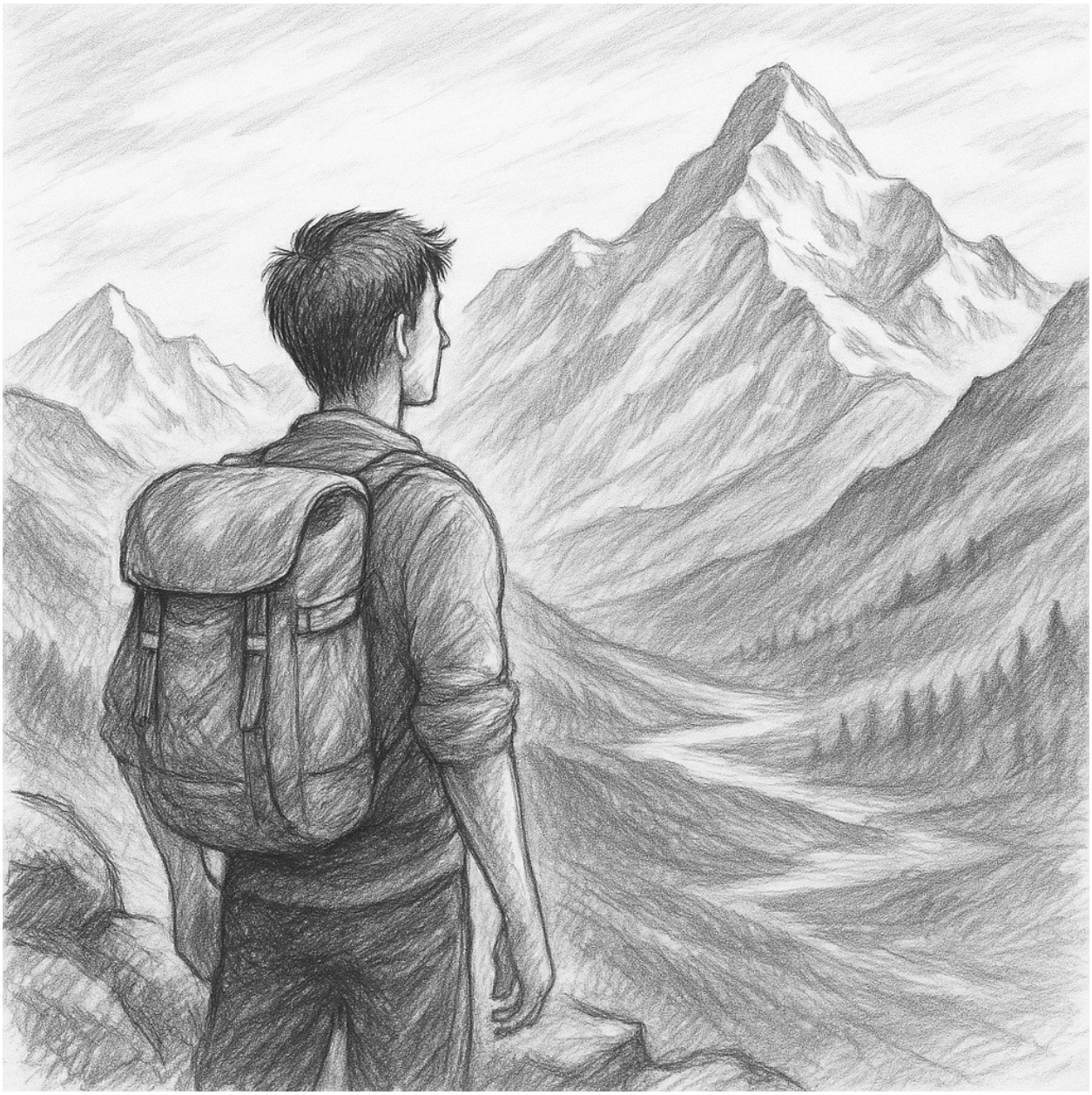

हर सुबह की शुरुआत ऐसे ही होती थी—वह जागती हुई घाटी को देखता रहता था, दूर चिमनियों से आती धुएं और मक्खन वाली चाय की खुशबू उसके कानों में घुलती रहती थी। लेकिन आज सुबह कुछ अलग सा महसूस हो रहा था। हवा एकदम शांत थी। छत की कड़ियों पर बैठे कौवे भी चुप थे, मानो वे भी किसी चीज़ का इंतज़ार कर रहे हों।

पास ही स्थित अपने छोटे से पत्थर के घर से आर्य की माँ, मीरा, ने पुकारा, “आर्य, पानी अंदर ले आओ, इससे पहले कि वह जम जाए!” उनकी आवाज़ गर्म और मधुर थी, ऐसी आवाज़ जो डांट को भी गीत जैसा बना देती थी। आर्य अनिच्छा से उस दृश्य से मुड़ा, नदी की ओर दौड़ा और तांबे के बर्तन में पानी भर लिया। मीरा ने दरवाज़े पर उसका स्वागत किया, अपने गाल से बालों की एक लट हटाते हुए।

उनकी आँखें भी आर्य की तरह ही चमकदार थीं, हालाँकि उनकी आँखें अधिक कोमल थीं—ऐसी आँखें जो सबसे चिड़चिड़े व्यक्ति को भी शांत कर सकती थीं।

अंदर, आग की लपटें तेज़ हो रही थीं और उनके पिता, किरण, छोटी मेज़ पर बैठे अपनी बर्फ़ काटने वाली कुल्हाड़ी को तेज़ कर रहे थे। एक अनुभवी पर्वतारोही, किरण का चेहरा धूप से झुलसा हुआ था और वर्षों की हवा और बर्फ़ के कारण झुर्रियों से भरा हुआ था। उन्होंने ऊपर देखे बिना कहा, "एक दिन तुम इस कुल्हाड़ी का ध्यान रखोगे। लेकिन उससे पहले तुम्हें यह सीखना होगा कि ये पहाड़ क्या चाहते हैं।"

आर्या ने हल्की सी मुस्कान दी। उसके पिता हमेशा ऐसे बोलते थे मानो पहाड़ सजीव प्राणी हों - कठोर शिक्षक जो हर पर्वतारोही की परीक्षा लेते हों।

कोने में, आर्या के दादा, दोरजे, लकड़ी के प्याले से चाय की चुस्की ले रहे थे। उनके सफेद बाल उनके चेहरे को घेरे हुए थे, जिस पर झुर्रियों के बावजूद जवानी की ताकत झलक रही थी। दोरजे कभी इस क्षेत्र के सबसे लोकप्रिय गाइड थे, और हालांकि अब वे पर्वतारोहण नहीं करते थे, लेकिन चोटियों के बारे में उनका ज्ञान बेजोड़ था।

आर्या उसे बहुत प्यार करती थी। शाम को दोरजे कहानियां सुनाता था—ऊंचे दर्रों को पार करने वाले कारवां की, पूरे गांवों को निगल जाने वाले तूफानों की, और पहाड़ों के रक्षक येती की। दोरजे जोर देकर कहता, “वह कोई राक्षस नहीं है,” और आग की रोशनी उसकी आंखों में पड़ती, वह और करीब झुक जाता। “वह एक आत्मा है। वही चुनती है कि कौन आगे जा सकता है और कौन नहीं।”

मीरा अक्सर मुस्कुराते हुए सिर हिलाती थी। "आप लड़के के दिमाग में बहुत सारी कहानियाँ भर देंगे, अबा।"

लेकिन आर्या वहां धड़कते दिल के साथ बैठी रहती, विशाल सफेद फर वाले जीवों की कल्पना करती जो उन पहाड़ियों पर चुपचाप चल रहे होते थे जहां कोई इंसान कदम रखने की हिम्मत नहीं करता था।
उस दोपहर, आर्य घाटी से बाहर निकलने वाली घुमावदार सड़क पर निकल पड़ा, जिस पर वह कुछ घंटों की पैदल यात्रा के बाद वापस लौट आया था। यह सड़क उन जगहों की ओर मुड़ती थी जिन्हें उसने कभी नहीं देखा था - कस्बे, बाजार और दूर स्थित राजधानी जिसके बारे में उसके दादाजी धीमी, श्रद्धापूर्ण आवाज़ में बात करते थे।

यात्री कभी-कभी मोटे लबादे ओढ़े इस रास्ते से गुज़रते थे, उनके खच्चरों के गले में पीतल की घंटियाँ बजती रहती थीं। वे अपने साथ दूर-दराज की खुशबुएँ लिए होते थे: इलायची, ऊन और नमक की हल्की सी महक। आर्य कुछ दूरी पर खड़े होकर उनकी कहानियाँ सुनते थे—नदियों के किनारे उगने वाले आम के पेड़ों की, निर्मम धूप में झुलसते रेगिस्तानों की, और इतने विशाल समुद्रों की कि उनका दूसरा किनारा दिखाई ही नहीं देता था।

लेकिन उनकी पसंदीदा कहानियाँ अब भी येती के बारे में ही थीं। दोरजे का दावा था कि एक बार ऊँचे दर्रे को पार करते समय उन्होंने येती की परछाई देखी थी। उन्होंने बस इतना कहा था, “येती मुझे देख रहा था। लेकिन उसने मेरा पीछा नहीं किया। यही मेरे लिए आगे बढ़ने की अनुमति थी।”

आर्या को पता नहीं था कि वह इस बात पर पूरी तरह विश्वास करता है या नहीं - लेकिन हर बार जब पहाड़ियों पर हवा ज़ोर से चलती थी, तो उसे अदृश्य आँखों की चुभन महसूस होती थी।
◆ ◆ ◆

उस दिन, एक आवाज़ ने उसके विचारों को भंग कर दिया: पूरब की सड़क से गूंजता हुआ एक गहरा हॉर्न। आर्य का दिल तेज़ी से धड़कने लगा। कारवां मतलब व्यापारी। व्यापारी मतलब खबरें, कहानियां... और शायद अवसर।

सबसे पहले खच्चर नज़र आए, उनकी नाक से भाप निकल रही थी। फिर व्यापारी आए— उत्तर से आए लंबे-लंबे आदमी, उनके कोट भेड़ की खाल से बने थे और जूते बर्फ से जमे हुए थे। उन्होंने दोरजे का आत्मीयता से अभिवादन किया और मजबूती से हाथ मिलाया।

आर्या पीछे हटकर खड़ी हो गई, मानो आगे चल रहे खच्चर की घंटियों का अध्ययन करने का नाटक कर रही हो, लेकिन वास्तव में वह हर बात ध्यान से सुन रही थी। व्यापारियों ने इस वर्ष एक ऊंचे दर्रे पर सुगम मार्ग, कम भूस्खलन और दूरदराज के उन गांवों के बारे में बताया जहां सर्दियों में जौ की फसल असाधारण रूप से अच्छी हुई थी।

जैसे ही उन्होंने सामान खोलना शुरू किया—सूखे खुबानी, याक की ऊन के कंबल, छोटे पीतल के दर्पण—आर्या की नज़र एक और चीज़ पर पड़ी: नक्शे। उनका मन उन्हें छूने के लिए बेचैन था।

किरण ने उसकी ओर देखा और मुस्कुराते हुए कहा, "शायद एक दिन ऐसा हो।" उसने धीमी आवाज़ में कहा, "लेकिन नक्शे तभी उपयोगी होते हैं जब आप पहाड़ के मिजाज को पढ़ना जानते हों।"

आर्य ने सिर हिलाया, हालांकि उसकी निगाहें उन घुमावदार स्याही की रेखाओं पर टिकी रहीं। उसे जरा भी अंदाजा नहीं था कि यही कारवां घटनाओं की एक ऐसी श्रृंखला की शुरुआत करेगा जो उसे उसकी कल्पना से भी कहीं अधिक ऊंचाइयों तक ले जाएगी और एक किंवदंती के मार्ग पर अग्रसर करेगी।

का आह्वान
पहाड़

कारवां के आगमन के अगले दिन सुबह, आर्य भोर से पहले ही उठ गया। पहाड़ की चोटियों पर तारे अभी भी जगमगा रहे थे, और हवा में रात भर जलती आग के धुएँ की हल्की सी महक थी। उसने नाश्ता करना शुरू ही किया था कि बाहर रास्ते से एक आवाज़ आई।

अरे! तुम वहाँ!

वह व्यापारियों में से एक था— चौड़े कंधों वाला, गाल पर निशान लिए, रंग-बिरंगे पैच वाले कोट में। उसके बगल में दो अजनबी खड़े थे जो स्पष्ट रूप से घाटी के नहीं थे। उन्होंने चमकीली सिंथेटिक जैकेट पहन रखी थी जो सुबह की रोशनी में अजीब तरह से जगमगा रही थी, और उनके जूते आर्य ने पहले कभी नहीं देखे थे—मोटे तले वाले और पिंडली तक बंधे हुए।

व्यापारी ने उनका परिचय मार्क और एलिस के रूप में कराया, जो एक दूर देश से आए पर्वतारोही थे और इस क्षेत्र की कुछ कम प्रसिद्ध चोटियों पर चढ़ाई करने आए थे। वे टूटी-फूटी अंग्रेज़ी और हिंदी में अटपटी बातें कर रहे थे, लेकिन उनकी आँखों में उत्साह झलक रहा था।
“वे चाहते हैं कि कोई उन्हें पीक 42 तक आधे रास्ते तक ले जाए,” व्यापारी ने आर्या की ओर इशारा करते हुए समझाया। “बस बेस कैंप तक। मैंने उनसे कहा कि आप यहाँ के हर पहाड़ी रास्ते और पहाड़ी चोटी को जानते हैं।”
आर्या का दिल ज़ोर से धड़क रहा था। चोटी 42 सबसे ऊँची तो नहीं थी, लेकिन खड़ी ढलान वाली और दुर्गम थी—एक ऐसी जगह जहाँ वह अनगिनत बार जा चुका था। उसने पास ही खड़े दोरजे की ओर देखा, जो अपने हाथ पीठ पीछे रखे खड़ा था। बूढ़े आदमी की आँखों में चमक थी।
“ठीक है,” दोरजे ने कहा, “अगर आपको लगता है कि आपके पैर काफी मजबूत हैं।” एक घंटे के भीतर, आर्य ने अपने पिता की अतिरिक्त रस्सी, एक छोटी बर्फ की कुल्हाड़ी और कपड़े में लिपटी सूखी रोटी पैक कर ली। मार्क और एलिस उनके पीछे-पीछे चल रहे थे, उनके बैग सामान से भरे हुए थे जो हर कदम पर हल्की खनक पैदा कर रहे थे।
जैसे-जैसे वे ऊपर चढ़ते गए, आर्य ने कुछ खास जगहों की ओर इशारा किया - सुबह की धूप में चमकता हुआ जमा हुआ झरना, वर्षों की हवाओं से मुड़ा हुआ पुराना जुनिपर का पेड़, और सोते हुए याक के आकार की चट्टान।
"तुम इस जगह को ऐसे जानती हो जैसे अपने हाथों से जानती हो," एलिस ने अपने स्कार्फ के बीच से मुस्कुराते हुए कहा।
“मेरे दादाजी ने मुझे यह सिखाया था,” आर्य ने उत्तर दिया। “वे कहते हैं कि पहाड़ एक मित्र है, लेकिन तभी जब आप उसका सम्मान करते हैं।”
दोपहर होते-होते वे एक संकरी पहाड़ी पर पहुँच गए जहाँ बर्फ पैरों के नीचे सूखी और कुरकुरी सुनाई दे रही थी। आर्या रुक गई और सामने की चोटियों को देखने लगी। दूर ढलान पर, एक छायादार खाई के पास, कुछ हिला। बर्फ के बीच एक विशाल आकृति, धुंधली सी।

"क्या बात है?" आर्या के रुकने पर ध्यान देते हुए मार्क ने पूछा।

आर्य ने आंखें सिकोड़ीं, लेकिन वह आकृति एक पहाड़ी के पीछे ओझल हो गई।
"शायद कोई पहाड़ी बकरी होगी," उसने जल्दी से कहा, हालांकि उसका दिल कुछ और ही कह रहा था।

जैसे ही आसमान पीतल के रंग का हुआ, वे बेस कैंप पहुँच गए। आर्य ने पत्थरों से एक छोटा सा विंडब्रेक बनाया और यात्रियों को दिखाया कि अचानक आने वाली तेज़ हवाओं से बचने के लिए टेंट की रस्सियों को कैसे बांधना है। पहाड़ शांत लग रहे थे, लेकिन वह जानता था कि वे पल भर में अपना रूप बदल सकते हैं।

जैसे ही रात हुई, चाँद की रोशनी में चोटियाँ हल्की-हल्की चमक उठीं। हवा में फुसफुसाहटें गूंज रही थीं—या शायद दूर ढलानों पर बर्फ के सरकने की हल्की सी आहट। आर्य अपने छोटे से आश्रय में जागता रहा और चोटी 42 की परछाई को देखता रहा। उसने दोरजे की कहानियों, चोटियों पर पड़ने वाली परछाइयों के बारे में सोचा और विचार किया कि क्या पहाड़ का रक्षक अब उन्हें देख रहा होगा।

हिमपात अपने चरम पर है

42

अगली सुबह इतनी कड़ाके की ठंड से भरी थी कि ऐसा लग रहा था मानो हवा भी त्वचा को काट सकती हो। आर्या जब उठा तो उसने अपने कंबल पर पाले की एक पतली परत जमी हुई पाई। पहाड़ शांत थे, मानो किसी चीज़ का इंतज़ार कर रहे हों।

मार्क और एलिस पहले से ही जाग चुके थे और एक छोटे से चूल्हे पर चाय गर्म कर रहे थे। भाप ऊपर की ओर उठती हुई, तेज़ी से ठंडी हवा में गायब हो जाती थी।

"आज मौसम साफ लग रहा है," मार्क ने ऊपर की पहाड़ियों की ओर देखते हुए कहा।

आर्या को इतना यकीन नहीं था। आसमान नीला तो था, लेकिन क्षितिज के पास एक अजीब सी धुंध छाई हुई थी। उसने दोरजे से सीखा था कि ऐसी धुंध एक चेतावनी होती है - पहाड़ों का यह कहने का तरीका कि मौसम कभी भी बेरहमी से बदल सकता है।

उन्होंने बेस कैंप से चढ़ाई शुरू की और ढलान पर टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर चलने लगे। बर्फ पैरों के नीचे एकदम कुरकुरी थी, हर कदम पर चरमराहट की आवाज़ आ रही थी। आर्य एक स्थिर गति से आगे बढ़ते रहे, बीच-बीच में सुरक्षित जगहों की ओर इशारा करते और अपनी कुल्हाड़ी से बर्फ की स्थिति का आकलन करते रहे।

आधे रास्ते में जाकर एलिस एक तस्वीर लेने के लिए रुक गई। उसने सांस लेते हुए कहा, "आप यहाँ रहते हैं, फिर भी, हर मोड़ जादुई लगता होगा।"

आर्या ने हल्की सी मुस्कान दी। “जादू, हाँ… लेकिन खतरा भी। मेरे पिता कहते हैं कि पहाड़ आग की तरह है। सुंदर तो है, लेकिन सावधानी के बिना उसे छूना नहीं चाहिए।”

पहाड़ी की चोटी संकरी होती चली गई, यहाँ तक कि वह उनके जूतों से भी मुश्किल से चौड़ी रह गई। एक तरफ ढलान जमी हुई धारा की ओर नीचे गिर रही थी। दूसरी तरफ, एक गहरी खाई एक अंधेरी घाटी में समा रही थी। हवा तेज़ हो गई और उनकी जैकेटों को खींचने लगी।

तभी आर्य ने उसे देखा—थोड़ी ही दूर, एक उथली खाई के पार, एक धुंधली आकृति पहाड़ी की चोटी पर सरकती हुई दिखाई दी। वह बकरी से बहुत बड़ी थी, और इंसान से बहुत शांत। वह इतनी सहजता से चल रही थी कि भूभाग की स्थिति असंभव लग रही थी, और जितनी तेज़ी से प्रकट हुई थी, उतनी ही तेज़ी से एक टीले के पीछे गायब हो गई।

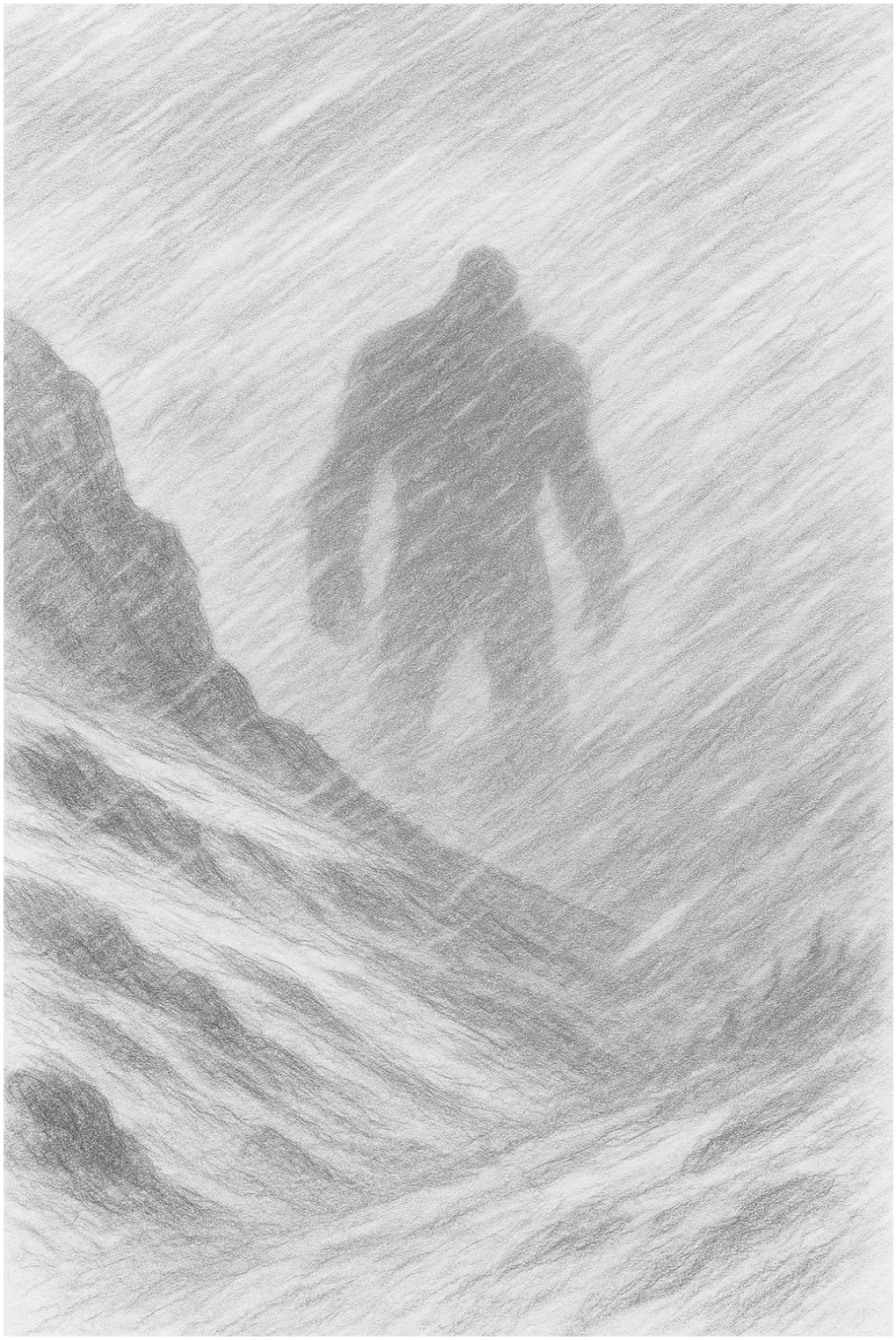

“□□□□ □□□□□ □□ □□□□?” □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□
“□□□□ □□□□□ □□?” □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□

□□□□□ □□□□□□□□□ “□□□ □□□□□ □□… □□□□ □□□□ □□□□”

दोपहर होते-होते, दूर की चोटियों पर बादल ऐसे छलकने लगे जैसे किसी चट्टान से झाग गिरता है। रोशनी कम होने लगी और हल्की बर्फ गिरने लगी, जो अनियमित पैटर्न में घूम रही थी। आर्य ने अपनी गति बढ़ा दी, लेकिन बर्फ इतनी घनी हो गई कि दुनिया धुंधली सफेद चादर में तब्दील हो गई।

"पास रहो!" आर्य ने तेज हवा के बीच चिल्लाकर कहा।

बर्फ़ीला तूफ़ान अचानक आ पड़ा। एक पल पहले वे बीस कदम आगे देख पा रहे थे; अगले ही पल, मुश्किल से दो कदम। हवा ज़ोर से चल रही थी, उनके हुडों को चीर रही थी। आर्य को अपने गालों पर बर्फ़ के क्रिस्टल चुभते हुए महसूस हो रहे थे।

वे चट्टान की एक संकरी पट्टी पर पहुँचे जहाँ हवा थोड़ी कम तेज़ थी। आर्य ने उन्हें दीवार से सटकर बैठने का इशारा किया।

"यह समय भी बीत जाएगा," उन्होंने कहा, हालांकि उन्हें पूरी तरह से यकीन नहीं था।

तूफ़ान घंटों तक जारी रहा। चारों ओर गरजती हुई सफेदी में, आर्य को लगा जैसे उसने कुछ सुना हो - हवा नहीं, बल्कि एक गहरी, लयबद्ध चरमराहट, मानो कोई भारी चीज़ पास में चल रही हो। वह आवाज़ करीब आई, फिर रुक गई।

“आर्या?” एलिस की आवाज़ उसके दुपट्टे में दबी हुई थी। “ये कैसी आवाज़ है?”

आर्य ने ध्यान से सुनने की कोशिश की, लेकिन तूफान की आवाज़ ने उसे दबा दिया। "शायद बर्फ खिसक रही है," उसने कहा, हालांकि उसकी धड़कन कुछ और ही बता रही थी।

जब हवा थोड़ी शांत हुई, तो आर्य उन्हें वापस बेस कैंप की ओर ले गया। तूफान ने उनके रास्ते के अधिकांश हिस्से को ढक दिया था, जिससे उसे बर्फ के नीचे की ज़मीन के स्पर्श पर निर्भर रहना पड़ा - कहीं हल्की सी ऊँचाई, कहीं हल्की सी खाई।
शिविर तक पहुंचते-पहुंचते वे थक चुके थे और ठंड से लगभग जम चुके थे। वे सब तंबू में घुस गए और गरमागरम चाय के मगों को हाथों में थाम लिया।

“बाल-बाल बच गए,” मार्क ने बुदबुदाते हुए कहा। “अच्छा हुआ कि तुम्हें रास्ता पता था।”

आर्य ने सिर हिलाया, लेकिन उसके विचार कहीं और थे—तूफान से पहले उसने जो फीकी आकृति देखी थी, उस पर। वह ऐसे चल रही थी मानो पहाड़ का ही हिस्सा हो, मानो बर्फीला तूफान उसके लिए किसी गुजरते बादल से ज्यादा कुछ नहीं था। उस रात, जब बाहर हवा सरसरा रही थी, आर्य ने ताजी बर्फ में बने विशाल पदचिह्नों का सपना देखा, जिनमें से प्रत्येक चांदनी से जगमगा रहा था।

लुप्त होना

आर्या द्वारा मार्क और एलिस के साथ पर्वतारोहण करने के तीन दिन बाद घाटी में विपत्ति आ गई।
सुबह की शुरुआत अन्य दिनों की तरह ही हुई - कुएं पर बाल्टियों की हल्की खड़खड़ाहट, धुंधले आकाश में फैलती जुनिपर के धुएं की महक - लेकिन दोपहर तक यह खबर फैल गई: किरण और मीरा, आर्य के माता-पिता, एक निर्देशित ट्रेक से वापस नहीं लौटे थे।

आर्य पुल के पास खड़ा था तभी उसने आवाजें सुनीं। दूसरे गांव के दो युवा कुली धीमी, लेकिन गंभीर आवाज में बात कर रहे थे।

"तूफान आने से ठीक पहले वे पहाड़ी की चोटी पर पहुंच गए थे," एक व्यक्ति ने कहा।
“मैंने सुना है कि विदेशी नीचे उतर गए, लेकिन गाइडों का कोई निशान नहीं मिला,” दूसरे ने जवाब दिया।

आर्या के चेहरे का रंग उड़ गया। वह दौड़कर गांव के चौक पर पहुंचा, जहां एक छोटी सी भीड़ जमा थी। बीच में जिला प्रशासक खड़ा था, जिसके दोनों ओर दो स्थानीय पुलिसकर्मी और बचाए गए कुछ पर्यटक थे।

पर्यटक कंबलों में लिपटे हुए थे, उनके गाल हवा से झुलस गए थे और छिल गए थे। उनमें से एक - हल्के बालों वाली एक लंबी महिला - टूटी-फूटी हिंदी में बात कर रही थी, उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे।

“उन्होंने… तुम्हारे माता-पिता ने… उन्होंने हमें बचाया,” उसने आर्या का हाथ पकड़ते हुए कहा। “हवा इतनी तेज़ थी… हर जगह बर्फ़ थी… अगर वे न होते तो हम गिर जाते। वे… वे आखिरी आदमी को बचाने के लिए वापस गए… और फिर…” उसकी आवाज़ भर्रा गई।

एक अन्य पर्यटक, एक बुजुर्ग व्यक्ति ने कहा, “हमने उन्हें पहाड़ी की चोटी से हमें हाथ हिलाकर नीचे आने का इशारा करते देखा… लेकिन फिर बर्फ एक दीवार की तरह आ गई। हम कुछ भी नहीं देख पा रहे थे।”

आर्या के दादा दोरजे आगे बढ़े और उस आदमी का कंधा पकड़ लिया। "क्या तुमने देखा कि वे कहाँ गए?"

वह आदमी हिचकिचाया। “नहीं। लेकिन… पैरों के निशान थे। बड़े-बड़े, हमारे नहीं। हमने सोचा शायद किसी और बचाव दल के हों, लेकिन…” उसने सिर हिलाते हुए अपनी बात अधूरी छोड़ दी।
आर्या का दिल बेचैन हो गया। बड़े-बड़े पदचिह्न? यह विचार बेतुका था... फिर भी इसने उसके भीतर कुछ हलचल पैदा कर दी - पहाड़ी की चोटी पर पड़ी धुंधली परछाई की याद, तूफान में सुनाई देने वाली आवाज़।

प्रशासक ने गला साफ करते हुए कहा, “हमने पहले ही एक खोज दल भेज दिया है। हालात खतरनाक हैं। फिलहाल, हमारी प्राथमिकता विदेशियों को सुरक्षित वापस लाना है।”

आर्या ने अविश्वास भरी निगाहों से उसकी ओर देखा। "और मेरे माता-पिता? आप उन्हें यूं ही छोड़ देंगे?"

प्रशासक की आवाज़ सख्त हो गई। “हमने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की है। अगर वे कुशल पर्वतारोही हैं, तो शायद उन्हें कोई आश्रय मिल गया होगा। मौसम साफ होते ही हम दोबारा कोशिश करेंगे।”
लेकिन आर्य जानती थी कि "जब मौसम साफ होगा" का मतलब कई दिन हो सकते हैं - और पहाड़ों में, कुछ दिन जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर हो सकते हैं।

उस शाम घाटी पहले से कहीं अधिक शांत लग रही थी। उसकी माँ की हँसी की सामान्य आवाज़ गायब थी; उसके पिता के औजारों को तेज करने की हल्की गुनगुनाहट भी सुनाई नहीं दे रही थी। यह सन्नाटा हवा में एक भारीपन की तरह महसूस हो रहा था।

दोरजे आग के पास बैठा लपटों को घूर रहा था। आर्य उसके बगल में काफी देर तक चुपचाप बैठी रही। आखिरकार, दोरजे बोला।
“तुम्हारे पिता ने एक बार मुझसे कहा था कि अगर पहाड़ कभी उन्हें अपने पास बुला ले, तो वह डर से नहीं, बल्कि सेवा भाव से—किसी और की मदद करने के लिए होगा। तुम्हारी माँ… वह उनका साथ कभी नहीं छोड़ेगी।”

आर्या ने बड़ी मुश्किल से अपनी बात कही। “उन्होंने उन पर्यटकों को बचा लिया। वे वापस आएंगे।”

दोरजे का जबड़ा कस गया, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा।

उस रात, आर्य जागता रहा और पर्यटकों की कही बातें उसके दिमाग में बार-बार गूंज रही थीं। बड़े-बड़े पदचिह्न। एक ऐसा तूफान जो मानो कहीं से आ गया हो। उसके माता-पिता का बर्फीले वातावरण में गायब हो जाना।

इस घाटी ने हमेशा उसे धैर्य सिखाया था—बर्फ पिघलने का, नदियों में पानी बढ़ने का, जौ के पकने का इंतज़ार करना। लेकिन यह अलग था। इंतज़ार करना उसे विश्वासघात जैसा लग रहा था।

वर्जित
खोज

अगली सुबह आसमान धूसर और भारी था, ऐसा लग रहा था मानो और बर्फबारी होने वाली हो। पहाड़ गांव के ऊपर मूक न्यायाधीशों की तरह मंडरा रहे थे। आर्या चूल्हे में जलती आग की चटकने की आवाज़ से जाग उठी। दोरजे पहले ही उठ चुका था और माथे पर शिकन लिए चाय का बर्तन चला रहा था।

आर्या ने जल्दी से कपड़े पहने और बाहर कदम रखा। हवा कड़ाके की ठंड थी और उसके पैरों के नीचे बर्फ़ तेज़ी से चरमरा रही थी। उसे गाँव से बाहर जाने वाला रास्ता दिखाई दे रहा था—वही रास्ता जो उसके माता-पिता ने कुछ दिन पहले तय किया था। उसकी अंतरात्मा उसे उस रास्ते पर चलने के लिए उकसा रही थी।

जब वह अंदर लौटा, तो दोरजे मेज पर उसका इंतजार कर रहा था। "बैठो," बूढ़े आदमी ने कहा और उसकी ओर एक गर्म प्याला सरका दिया।

आर्य ने कांपते हाथों से ही उसे ले लिया। दोरजे ने बोलने से पहले कुछ देर तक उसे गौर से देखा।

“मैं जानता हूँ कि आप क्या सोच रहे हैं,” दोरजे ने कहना शुरू किया। “आप उनका पीछा करना चाहते हैं। लेकिन आप ऐसा नहीं कर सकते।”

आर्या ने सिर ऊपर उठाया। "क्यों नहीं? मैं इन पहाड़ों को किसी और की तरह ही अच्छी तरह जानती हूँ। मैं कर सकती हूँ—"

दोरजे ने हाथ उठाया। “नहीं। यह तूफान अभी भी आगे बढ़ रहा है। खोज दल पहले ही काफी जोखिम उठा चुका है। आपके माता-पिता कुशल हैं - वे घर का रास्ता खोज लेंगे।”

आर्या की आवाज कांप उठी। "और अगर वे ऐसा नहीं करते तो?"

दोरजे ने आह भरी और पीछे झुक गया। आग की रोशनी से उसके झुर्रीदार चेहरे की लकीरें और गहरी हो गईं। “आर्या… तुम्हारी उम्र में मैंने भी ऐसे ही एक तूफान में अपने भाई को खो दिया था। हमने सोचा था कि हम उसे ढूंढ लेंगे, लेकिन पहाड़ ने उसे अपने साथ ले लिया। बर्फ रास्तों को छुपा देती है, घाटियों को मोड़ देती है, और हर उस चीज़ को बदल देती है जिसे तुम जानते हो। अगर तुम बिना तैयारी के जाओगे तो यह तुम्हें भी अपने साथ ले जाएगी।”

आर्या अपनी चाय को घूर रहा था। वह बहस करना चाहता था, चिल्लाकर कहना चाहता था कि वह तैयार था, कि उसने इससे भी बुरे मौसम में इन पहाड़ियों पर चढ़ाई की थी। लेकिन दोरजे की आँखों में एक उदासी थी जिसने उसे रोक दिया।

काफी देर तक दोनों में से कोई नहीं बोला। फिर दोरजे ने कहानियां सुनाना शुरू किया - वे हल्की-फुल्की कहानियां नहीं थीं जो वह कभी-कभार आग के पास बैठकर सुनाया करता था, बल्कि आर्य के माता-पिता की यादें थीं।

“तुम्हारे पिता,” दोरजे ने धीरे से कहा, “एक बार एक घायल पर्यटक को कमर तक गहरी बर्फ में पाँच मील तक अपनी पीठ पर लादकर ले गए थे। वे पूरे रास्ते हँसते रहे और कहते रहे कि इससे उन्हें गर्मी मिलती है। और तुम्हारी माँ… एक साल जब जौ की फसल खराब हो गई, तो वह तीन घाटियाँ पार करके बुने हुए कंबल के बदले अनाज लेने गईं ताकि गाँव के लोग भूखे न रहें।”

आर्या का गला सूख गया। ये महज़ मार्गदर्शक या पर्वतारोही नहीं थे—ये वो लोग थे जो बिना किसी झिझक के दूसरों की सेवा में जुट जाते थे। उनके कहीं सन्नाटे में फँसे होने का ख्याल असहनीय था।
◆ ◆ ◆
उस रात, आर्य जागता रहा और बाहर हवा की आवाज़ सुनता रहा। अंधेरे में उसे एक और पल याद आया - पिछली गर्मियों का, जब उसकी माँ उसे एक ऊँचे घास के मैदान में ले गई थी। वे दोनों बैठकर पहाड़ों की चोटियों के पीछे सूरज को डूबते हुए देख रहे थे।

“मुझसे वादा करो, आर्या,” उसने कहा था, “कि तुम कभी भी किसी जरूरतमंद व्यक्ति से मुंह नहीं मोड़ोगी, भले ही दुनिया तुमसे कहे कि यह बहुत मुश्किल है।”

और एक दिन, चढ़ाई से पहले आर्य के बैग का पट्टा कसते हुए उनके पिता ने कहा: “पहाड़ उन्हें देता है जो उसे देते हैं। आप उसका सम्मान करें, और वह आपको वहाँ ले जाएगा जहाँ आपको जाना है।”

वे शब्द उसके सीने में सुलगती आग की तरह थे। भोर होते-होते उसने अपना फैसला कर लिया।

वह चुपचाप उठा और अंधेरे घर में धीरे-धीरे चलने लगा ताकि दोरजे की नींद न टूटे। अपने कमरे में उसने अपना थोड़ा-बहुत सामान समेटा - रस्सी, एक बर्फ काटने की कुल्हाड़ी, सूखी रोटी, पानी की बोतल और उसकी माँ द्वारा बनाया गया ऊनी स्कार्फ। उसने मेज पर एक मुड़ा हुआ नोट छोड़ दिया:
दादाजी, मुझे माफ करना। मुझे जाना होगा। अगर मैं इंतजार करता रहा तो बहुत देर हो जाएगी।
जैसे ही उसने ठंडी हवा में कदम रखा, दरवाजे से हल्की चरमराहट की आवाज आई।
सामने विशाल और घने पहाड़ दिखाई दे रहे थे, जिनकी चोटियाँ बादलों में छिपी हुई थीं।

आर्य ने अपना स्कार्फ कसकर बांधा, अपना बैग ठीक किया और चढ़ाई शुरू कर दी।

फुसफुसाहट में
बर्फानी तूफान

आर्य की चढ़ाई का पहला घंटा बिल्कुल शांत था, सिवाय बर्फ में उसके जूतों की चरमराहट और उसकी अपनी धीमी, स्थिर साँसों की आवाज़ के। घाटी उसके पीछे बहुत दूर तक फैली हुई थी, गाँव की छतें अब धुंध में बस धुंधली सी दिखाई दे रही थीं।

वह पीक 42 की ओर निचले रास्ते पर तेज़ी से आगे बढ़ा, जब तक कि रोशनी अच्छी थी। ऊपर का आकाश धुंधला धूसर था, और हवा में अभी तक न आए तूफान की तीखी आहट थी।

दोपहर तक वह उस जगह पहुँच गया जहाँ बचाए गए पर्यटकों ने उसके माता-पिता को आखिरी बार देखा था। वहाँ बर्फ मोटी, चिकनी और अटूट थी—मानो पहाड़ ने संघर्ष के सभी निशान मिटा दिए हों। आर्य घुटनों के बल बैठ गया और ढलान पर हर चीज़ की तलाश करने लगा: कपड़े का फटा हुआ टुकड़ा, सामान का गिरा हुआ कोई टुकड़ा। कुछ नहीं मिला।

वह खड़ा रहा, चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था, तभी उसके कानों में एक हल्की, धीमी, मानो हवा में तैरती हुई आवाज़ हो। उसने तेज़ी से मुड़कर देखा, लेकिन उसे केवल बर्फ के टुकड़े ही दिखाई दिए।

फिर वही आवाज़ आई। वो शब्द तो नहीं थे, लेकिन हवा की सीटी से अलग थे। वो... ज़्यादा गहरी और भारी थी।
वह सावधानी से, पहाड़ी की चोटी पर संभलकर कदम बढ़ाते हुए उसकी ओर बढ़ा।
बर्फ़ मोटी होती गई, हवा ठंडी होती गई। जल्द ही, दुनिया एक सफ़ेद सुरंग में सिमट गई।

और फिर—गति।

आगे मंडरा रहे तूफान से तीन आकृतियाँ उभरीं, ज़मीन से सटी हुई, शिकारी जैसी फुर्ती से आगे बढ़ती हुई। हिम तेंदुए। उनके हल्के रंग के फर पर भूरे रंग के धब्बे थे जो बर्फ के ढेर में घुलमिल गए थे, उनकी पूंछें फड़फड़ा रही थीं।

आर्या की सांस अटक गई। वह जानता था कि भागना व्यर्थ होगा—भागने से वह शिकार बन जाएगा। इसके बजाय, उसने अपनी बर्फ की कुल्हाड़ी को कसकर पकड़ा और धीरे-धीरे चट्टानों के एक समूह की ओर पीछे हटने लगा। तेंदुए फैल गए और उसे घेर लिया, धुंधली रोशनी में उनकी आंखें सुनहरी चमक रही थीं।

सबसे बड़ा वाला झुककर बैठ गया, छलांग लगाने के लिए उसकी मांसपेशियां तन गईं।

□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ - □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□, □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□, □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□

धुंध के बीच से आर्या ने उसे देखा— एक विशालकाय आकृति, चौड़े कंधों वाली, घने सफेद फर से ढकी हुई जो तूफान के साथ पूरी तरह घुलमिल गई थी। वह जानबूझकर शांत भाव से बढ़ी, तेंदुओं की ओर नहीं, बल्कि आर्या की ओर। बिल्लियाँ फुफकारीं, फिर बर्फ में गायब हो गईं, मानो उन्होंने तय कर लिया हो कि यह उनकी लड़ाई नहीं है।

आर्या का दिल ज़ोर से धड़क रहा था। वह आकृति थोड़ी दूरी पर आकर रुक गई, और कुछ पल के लिए वे एक-दूसरे को देखते रहे। बर्फ़ के बवंडर के बीच भी, आर्या उसकी विशालता को देख सकता था—आसानी से आठ या नौ फीट लंबा—और उसकी गहरी आँखें जो उसे द्वेष से नहीं, बल्कि किसी ऐसी भावना से देख रही थीं जिसे समझना असंभव था।

हवा और भी तेज चलने लगी, और जब आर्य ने पलकें झपकाईं, तो वह आकृति फिर से हिलने लगी - अब उसकी ओर नहीं, बल्कि ढलान पर ऊपर की ओर, पीछे मुड़कर मानो कह रही हो: मेरे पीछे आओ।

गुफा का
अभिभावक

एक आर्य उसके पीछे-पीछे चल रहा था, वह आकृति हमेशा उसके ठीक आगे थी, न कभी बहुत पास, न कभी बहुत दूर। उसका रास्ता ऐसा था जैसा आर्यों ने पहले कभी नहीं देखा था— संकरी घाटियों से होकर, जमी हुई धाराओं के ऊपर से, और ऐसी पहाड़ियों से होकर गुजरता था जहाँ एक गलत कदम का मतलब था अंत में गिर जाना।

घंटों बीतते प्रतीत हुए। तूफान और भी घना हो गया, लेकिन किसी तरह रास्ता दिखाई देता रहा, मानो बर्फ उसे छुपाने में हिचकिचा रही हो।

अंततः, वह आकृति उसे चट्टान की एक अंधेरी दरार तक ले गई, जो बर्फ की एक मोटी परत से आधी छिपी हुई थी। बिना कोई आवाज़ किए, वह अंदर चली गई। आर्या हिचकिचाई, फिर उसके पीछे चली गई।

गुफा बाहर की हवा से ज़्यादा गर्म थी, पत्थरों के घेरे में जलाई गई एक छोटी सी आग की हल्की नारंगी रोशनी से जगमगा रही थी। एक आकृति उसके बगल में बैठी थी और सूखी टहनियों का एक मुट्ठी भर हिस्सा आग में डाल रही थी। आर्य गुफा के प्रवेश द्वार पर खड़ा था, उसकी साँसें धीमी हो रही थीं क्योंकि वह दृश्य को समझने की कोशिश कर रहा था, उसे समझ नहीं आ रहा था कि आगे बढ़े या तूफान में पीछे हट जाए।

नज़दीक से देखने पर उसे बारीकियाँ नज़र आईं—फर कोई आवरण नहीं था, बल्कि जीव का ही हिस्सा था, मोटा और खुरदरा। उसके हाथ विशाल थे, उंगलियों के सिरे पर कुंद, गहरे रंग के नाखून थे जो शक्तिशाली होने के साथ-साथ इस्तेमाल से घिसे हुए भी लग रहे थे। आधा छाया में छिपा चेहरा फर से घिरा हुआ था, आँखें गहरे भूरे रंग की और स्थिर थीं।

उसने कुछ नहीं कहा। इसके बजाय, उसने इशारे किए—धीरे-धीरे हाथ को आग की ओर बढ़ाया, फिर गुफा के पीछे एक संकरी सुरंग की ओर। आर्य के पैर लगभग बिना सोचे-समझे ही चलने लगे, हर कदम उसके नीचे जमी हुई धूल और बर्फ पर धीरे से चरमरा रहा था।

अब उसे अपने चेहरे पर लपटों की गर्मी महसूस हो रही थी, जो उसके कपड़ों से चिपकी बर्फीली हवा के विपरीत एक सुखद एहसास था, लेकिन उस प्राणी की निकटता ने उसकी रीढ़ की हड्डी में बेचैनी की एक लहर दौड़ा दी।

उस प्राणी ने गुफा के किनारे बर्फ के ढेर में हाथ डाला और कुछ निकाला— कपड़े की एक पट्टी, जो जम चुकी थी। आर्य की सांसें थम गईं। यह उसके पिता की जैकेट थी।

येती—क्योंकि उसका कोई और नाम हो ही नहीं सकता था—ने आर्या के हाथों में कपड़ा रखा और फिर सुरंग की ओर इशारा किया। इसका अर्थ स्पष्ट था: यही रास्ता है।

आर्या ने आखिरी बार उन आँखों में देखा। उनमें कोई धमकी नहीं थी, बस शांत आत्मविश्वास था। उसने कपड़े को कसकर पकड़ते हुए हल्का सा सिर हिलाया और सुरंग की ओर मुड़ गया।

उसके पीछे, आग की हल्की चटकने की आवाज और बाहर के तूफान की धीमी फुफकार फीकी पड़ती हुई प्रतीत हुई, और उसकी जगह उसके अपने दिल की धड़कन सुनाई देने लगी।

वह आगे बढ़ा, अंधेरे में, उस रास्ते पर चलते हुए जो रक्षक ने उसे दिखाया था। उसे पता था कि कहीं आगे उसके माता-पिता उसका इंतजार कर रहे हैं।

बचाव

सुरंग पहले संकरी थी, इतनी ही चौड़ी कि आर्य उसमें से मुश्किल से निकल सके, उसका बैग खुरदुरे पत्थरों से रगड़ खा रहा था। उसके जूते बर्फ के टुकड़ों पर चरमरा रहे थे, और हवा में चीड़ के धुएं की हल्की सी महक थी - पहाड़ की इतनी ऊंचाई पर यह एक अजीब सी गंध थी।

जैसे-जैसे वह अंदर की ओर बढ़ता गया, जगह एक घुमावदार रास्ते में बदल गई जो नीचे की ओर ढलान पर था। बाहर हवा की हल्की आवाज़ की जगह एक और आवाज़ सुनाई देने लगी— लयबद्ध, स्थिर… टपकते पानी की आवाज़। अंधेरे में कहीं बर्फ पिघल रही थी।

वह आगे बढ़ता रहा, उसकी हेडलाइट की रोशनी दीवारों पर लंबी-लंबी परछाइयाँ बना रही थी। उसकी जेब में रखा कपड़े का टुकड़ा उसके पैर पर गर्म महसूस हो रहा था, मानो उसमें उसके पिता की उपस्थिति का कोई अंश समाया हो।

कई घंटों के अंतराल के बाद, वह बर्फ की खड़ी दीवारों से घिरी एक छोटी सी घाटी में पहुंचा, जो हवा से सुरक्षित थी। यहाँ तूफान का प्रकोप कुछ कम था, और ऊपर का आकाश हल्का भूरा चमक रहा था।

उसने खाई पर नजर दौड़ाई—और फिर उसे वह दिखाई दिया। बर्फ का एक ढेर थोड़ा सा हिला, और एक दबी हुई चीख उसके कानों तक पहुंची।

“बाबा!” आर्या की आवाज कांप रही थी और वह दौड़ते हुए उसकी ओर भागा, घुटनों के बल बैठ गया और हाथों से बर्फ को खुरचने लगा। ठंड से उसकी उंगलियां जल रही थीं, लेकिन वह रुका नहीं।

एक आकृति उभरी—पहले एक बांह, फिर एक कंधा, जो उसके पिता की जैकेट के परिचित भूरे ऊन में लिपटा हुआ था। किरण की आंखें धीरे-धीरे खुलीं, भ्रम धीरे-धीरे पहचान में तब्दील हो गया।

“आर्य…?”

आर्या एक ही समय में हंस भी रही थी और रो भी रही थी। "मैं यहाँ हूँ। मैंने तुम्हें ढूंढ लिया।"

किरण की आवाज कमजोर थी। "तुम्हारी माँ... वो... यहीं है।"

आर्य ने दोबारा खुदाई की और दूसरी तरफ बढ़ा, जहाँ एक और आकृति फंसी हुई थी। मीरा का चेहरा पीला पड़ गया था, होंठ नीले पड़ गए थे, लेकिन उसके स्पर्श से उसकी आँखें खुल गईं।

“रुको,” आर्य ने कहा, सीने में घबराहट के बावजूद उसकी आवाज़ स्थिर थी। उसने अपना छोटा फोल्डिंग फावड़ा निकाला और तेज़ी से काम करते हुए उसे बर्फ की जकड़ से मुक्त किया।

जब वे दोनों आज़ाद हो गए, तो उसने अपने बैग से आपातकालीन कंबल निकालकर उन्हें लपेट दिया। उसने कहा, "हमें चलना होगा। पास ही में आश्रय स्थल है।"

गुफा के प्रवेश द्वार की ओर लड़खड़ाते हुए वे उस पर सहारा लेकर आगे बढ़े। आर्य ने ऊपर की ढलानों की ओर पीछे मुड़कर नहीं देखा—लेकिन उसकी दृष्टि के एक कोने में, बहुत ऊपर, उसे लगा कि एक लंबा सफेद व्यक्ति पहाड़ी की चोटी पर खड़ा होकर देख रहा है।

जब तक वे गुफा तक पहुँचे, आग अभी भी जल रही थी। आर्य ने यह नहीं पूछा कि ऐसा क्यों हो रहा है। उसने अपने माता-पिता को आग की लपटों के पास बिठा दिया, ताकि गर्मी उनके ठंडे शरीरों में समा जाए।

किरण ने उसका हाथ पकड़ लिया। "तुम्हें कैसे पता चला कि हम कहाँ हैं?"

आर्या हिचकिचाया। सच्चाई उसके गले तक आ गई, लेकिन उसने उसे निगल लिया।
"पहाड़ ने मुझे दिखाया," उसने सरल शब्दों में कहा।

वापसी और
गुप्त

दो दिन बाद, आखिरकार तूफान थम गया। आसमान चमकीले नीले रंग से भर गया और पहाड़ियाँ सूर्य की रोशनी में काँच की तरह चमक उठीं।
आर्या अपने माता-पिता को धीरे-धीरे, बर्फ पर सावधानी से पहाड़ से नीचे ले गया। जब घाटी नज़र आने लगी, तो हवा में हल्की-हल्की लकड़ी के धुएं और चीड़ के राल की खुशबू फैली हुई थी।

जब वे गांव पहुंचे, तो लोग उनसे मिलने के लिए दौड़ पड़े। सबसे पहले दोरजे पहुंचा, जिसका आमतौर पर गंभीर चेहरा आंसुओं से भर आया और उसने आर्या के कंधों को पकड़ लिया।

“तुम… तुम उन्हें घर ले आए,” उसने कांपती हुई आवाज में कहा। “मेरे बेटे।” मीरा ने अपने पिता को कसकर गले लगाया। "आर्या के बिना हम यहां नहीं होते।"

जिन पर्यटकों को उन्होंने बचाया था, वे भी इंतज़ार कर रहे थे, घटनाक्रम का अपना पक्ष बताने के लिए उत्सुक थे। लेकिन आर्य चुप रहे, उन्हें बोलने दिया। उन्हें अपने अंदर छिपे रहस्य का बोझ महसूस हो रहा था—तूफान में यति की छवि, उनके हाथों में रखा गया कपड़े का टुकड़ा, और मौन मार्गदर्शन।

उस रात, उत्सव शांत होने के बाद, आर्य बाहर बैठा पहाड़ों की ओर देखता रहा। चांदनी से पहाड़ की चोटियाँ चाँदी की तरह चमक रही थीं। उसे पता था कि कहीं न कहीं, रक्षक अभी भी उसे देख रहा है।

उसने अपनी जेब में हाथ डाला और कपड़े की पट्टी निकाली। वह घिसी-पिटी और फटी हुई थी, लेकिन उसके लिए वह एक खजाना थी - एक ऐसी याद दिलाती थी कि पहाड़ उन तरीकों से जीवंत हैं जिन्हें अधिकांश लोग कभी नहीं समझ पाएंगे।

दोरजे उसके पास आकर बैठ गया और उसे चाय का प्याला देते हुए बोला, “पहाड़ ने तुम्हें चुना है, आर्य। यह सम्मान बहुत कम लोगों को मिलता है।”

आर्य ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने बस हल्की सी मुस्कान दी, उसकी निगाहें सबसे ऊँची पहाड़ी पर टिकी हुई थीं।

यह रहस्य सुरक्षित था। फिलहाल के लिए।

जिस लड़के ने छुआ
आकाश

वर्ष धीमी बर्फ की तरह बीतते गए। आर्या लंबा और मजबूत होता गया। उसने मौसम से कहीं अधिक पढ़ना सीख लिया। वह लोगों के डर और सुख को समझने लगा और दोनों की मदद करना सीख गया। लोग उसे काम पर रखने के लिए गाँव आने लगे। उसने बचाव दल का मार्गदर्शन किया, उसने छोटे लड़कों और लड़कियों को वही गांठें बाँधना सिखाया जो उसके पिता ने उसे सिखाई थीं, उसने पहाड़ियों की चोटियों पर छोटे प्रार्थना झंडे लगाए।

उनकी ख्याति घाटियों में फैल गई। जो यात्री कभी पहाड़ों की चोटियों पर अकेले चलते थे, अब आर्य को चुनते थे, क्योंकि उनके हाथ स्थिर थे और उनकी आवाज शांत थी। उन्होंने कभी घमंड नहीं किया। उन्होंने युवा मार्गदर्शकों को सिखाया कि पहाड़ों का सबसे पहले सम्मान करें और सावधानी को मित्र की तरह साथ रखें।

कभी-कभी, किसी शांत सुबह में, जब प्रकाश दुनिया के शिखर पर दूध की तरह चमकता था, आर्य ऊपर देखता और दूर किसी पहाड़ी पर एक परछाई को हिलते हुए देखता। वह मुस्कुराता और रक्षक के बारे में सोचता। उसने उस छोटे से चिह्नित पत्थर को अपने पिता की रस्सी और दादाजी के मोतियों के साथ एक छोटी सी पेटी में छिपाकर सुरक्षित रखा था। वह कभी-कभी यह कहानी सुनाता था, लेकिन रक्षक वाली बात को छोड़ देता था, उसे अपने परिवार और दोरजे से गुप्त रखता था।

पहाड़ों ने उसकी कड़ी परीक्षा ली और फिर उसे उसका परिवार और उसका मार्ग लौटा दिया। उसने अपने रास्ते में आकाश को छुआ था, और उस स्पर्श ने उसे एक सौम्य, स्थिर व्यक्ति बना दिया। उसने दूसरों को सिखाया और जरूरतमंदों की मदद की। पहाड़ ने अपने रहस्य छुपाए रखे, और आर्य ने उनका सम्मान किया। वह घाटी और ऊंचे स्थानों के बीच एक सेतु बन गया, लोगों को याद दिलाता रहा कि साहस शांत होता है और प्रेम एक लड़के को अपने परिवार को घर वापस लाने का मार्ग दिखा सकता है।
प्रिय पाठक,

आर्या के साथ पहाड़ी रास्तों पर चलने के लिए धन्यवाद। यह कहानी छोटी-छोटी आवाज़ों से जन्मी है—दादाजी की कहानियाँ, माँ के गीत, पिता का स्नेह भरा हाथ। अगर इस कहानी ने आपके दिल को छू लिया हो या आपको उस साहस की याद दिला दी हो जो लोगों को करीब रखता है, तो मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा यदि आप उस

[illegible]

[illegible]

[illegible],
— [illegible]

***** [illegible] *****

sjeet